“डा0 भरत राज सिंह का संक्षिप्त परिचय”

डा**0** भरत राज सिंह का जन्म**,** 1947 में जनपद सुल्तानपुर के एक गॉव राईबीगों में हुआ था। इनकी स्कूली शिक्षा सुल्तानपुर व जौनपुर से हुई तथा इन्होनें बी.एससी. की डिग्री इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1967 में पूर्ण की। तदोपरान्त तकनीकी में ग्रेजुएट शिक्षा**,** यांत्रिक संवर्ग में ‘सरदार बल्लभ रीजनल कालेज सूरत गुजरात’ से 1972 में**,** पोस्ट ग्रेजुएट**,** यांत्रिक संवर्ग में ‘मोतीलाल रीजनल कालेज इलाहाबाद’ से 1988 में व पी.एच.डी. की उपाधि यांत्रिक संवर्ग में उत्तर-प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ से 2011 में प्राप्त की।

डा. सिंह प्रारम्भ से ही ‘विज्ञान व अन्वेषण’ में प्रतिभावान ब्यक्तित्व के धनी छात्र रहे तथा इन्हें प्रदेश में महामहिम **श्री राज्यपाल** द्वारा ***विज्ञान में अविष्कार*** *हेतु 1965 में* ***अवार्ड***, प्रदान किया गया था। इसके अतिरिक्त ‘**वेस्ट-आफिसर**’ अवार्ड 1981 में तथा ***भूकम्प कार्य*** *हेतु 2004 में* ***समाज श्री*** के राष्ट्रीय अवार्ड से मुम्बई में नवाजा गया तथा शोध कार्य हेतु तीन-बार 2014, 2015 व 2017 में **लिम्का बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड** में दर्ज करा चुके हैं |

डा0 सिंह का 48 वर्षो से अधिक का अनुभव प्रशासनिक व शिक्षा के क्षेत्र में रहा है, जिसमें 32 वर्ष तक भारत सरकार, प्रदेश सरकार के संस्थानों में अभियन्ता स्तर से प्रबन्ध निदेशक, यू.पी. राजकीय निर्माण निगम स्तर तक सेवारत रहे तथा सेवानिवृत्ति के उपरान्त शिक्षण में पिछले 15–16 वर्षा से प्रोफेसर, हेड, डीन, निदेशक विभिन्न स्तर पर तथा वर्तमान में महानिदेशक के पद पर स्कूल ऑफ मैनेजमेन्ट साईन्सेसए तकनीकी परिसर, लखनऊ में कार्यरत हैं।

शिक्षा जगत में, शुरु से अति ‘सूक्ष्म एंव गहन’ चिन्तक होने के कारण सेवानिवृत्ति के उपरान्त, पुनः अध्ययन प्रारम्भ किया और पिछले 15-16 वर्षा से विश्व स्तर पर पर्यावरण व वातावरण परिवर्तन की दिशा में अद्वितीय कार्य किया है।

पी.एच.डी. की उपाधि, इनके चतुर्थ पढ़ाव का एक उदाहरण है। इन्होंने पर्यावरण की विश्वस्तरीय विभिषिका को कम करने हेतु हाईड्रोकार्बन ईधन के स्थान पर ‘हवा से संचालित इन्जन’का आविष्कार किया, जो इनके 2004 से 2010 तक के अथक प्रयास का फल है। इस प्रदूषण रहित इन्जन का छोटे वाहनो में उपयोग से 50-60% कार्बन-उत्सर्जन में कमी का आकलन किया गया है, जो विश्व व्यापी पर्यावरण विभिषिका को नयी दिशा देने में अग्रसर है।

इनके इस शोध की विश्व में अमेरिका, ब्राजील, कनाडा, जर्मनी, ईरान, ईराक, पाक्स्तिन, चीन, ताइवान, बुल्गेरिया, थाईलैण्ड, कोरिया आदि देशो में न्यूज मीडिया, रेडियो, दूरदर्शन द्वारा पिछले दो-वर्षा से अत्यन्त चर्चा का विषय बना हुआ है तथा ‘भारत सरकार के पेटेन्ट विभाग’ द्वारा 13 अप्रैल 2012 को पेटेन्ट भी नोटीफाई हो गया और 28 जुलाई 2020 को प्रमाण पत्र 10 वर्षो के अनुसंधान परीक्षणोंप्रांत जारी किया गया |

डा0 सिंह को विश्वस्तरीय प्रतिष्ठित लगभग 37- जनरल व शोध संस्थानों नें ‘सदस्य व सलाहकार सदस्य’ भी नियुक्त कर रखा है, जिसमें ये निरन्तर योगदान दे रहे है। इनसे प्रतिष्ठित संस्थान एल्सवीयर के साइन्स डारेक्टए आईमेक, यू0 के0, अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स द्वारा निरन्तर शोध हेतु सलाह ली जा रही है।